

संस्कृतवर्षस्मृतिग्रन्थमाला

अप्रकाशितपाण्डुलिपिग्रन्थप्रकाशनम् - ८

प्रधानसम्पादकः - वेम्पटि कुटुम्बशास्त्री

वराहमिहिरकृता

बृहत्संहिता

कुमारसुत-भास्करयोगि-कृतया

उत्पलपरिमलाख्यया व्याख्यया संवलिता

सम्पादकः

के. वी. शर्मा



राष्ट्रीयसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

नवदेहली

Sanskrita Varsha Smriti Grantha Mala

Unpublished Manuscript Publication - 9

General Editor - Vempaty Kutumba Sastry

BRHAT SAMHITĀ

Of

VARĀHAMIHIRA

With the Commentary of
Utpalapatimāla of Yogīśvara

PART-I

Critically edited

By

Dr. K.V. Sarma



RASHTRIYA SANSKRIT SANSTHAN

(Deemed University)

New Delhi

अध्यायनाम

पृष्ठम्

3. आदित्यचाराध्यायः

- | | | |
|----|-------------|----|
| 1. | अयनक्रमः | 64 |
| 2. | अर्कचारफलम् | 66 |

4. चन्द्रचाराध्यायः

- | | | |
|----|-----------------------------|----|
| 1. | चन्द्रस्य सितासितवृद्धिहासः | 77 |
| 2. | चन्द्रचारफलम् | 80 |
| 3. | इन्दुरूपफलम् | 84 |

5. राहुचाराध्यायः

- | | | |
|----|-----------------------------|-----|
| 1. | राहोः ग्रहत्वविचारः | 94 |
| 2. | सूर्यचन्द्रग्रहणयोर्युक्तिः | 98 |
| 3. | पर्वणां सप्तदेवतानां फलम् | 104 |
| 4. | ग्रहणदर्शनफलम् | 106 |
| 5. | ग्रहाणां ग्रहणदृष्टिफलम् | 120 |
| 6. | ग्रहणानां मासफलम् | 124 |
| 7. | ग्रहणमोक्षलक्षणं फलानि च | 129 |

6. भौमचाराध्यायः

- | | | |
|----|----------------------|-----|
| 1. | भौमस्य पञ्चवक्त्राणि | 142 |
|----|----------------------|-----|

7. बुधचाराध्यायः

- | | | |
|----|-----------------------|-----|
| 1. | बुधोदयस्वरूपम् | 148 |
| 2. | बुधस्य ऋक्षचारादिफलम् | 149 |
| 3. | बुधस्य सप्तगतयः | 151 |

8. बृहस्पतिचाराध्यायः

- | | | |
|----|---------------------------------|-----|
| 1. | बार्हस्पत्याब्दानां संज्ञाक्रमः | 156 |
|----|---------------------------------|-----|

एवं सम्यगधिगतज्योतिर्ज्ञानः पङ्क्तिपावन इत्याह —

ग्रन्थतश्चार्थतश्चैतत्¹ कृत्स्नं² जानाति यो द्विजः ।
अग्रभुक् स भवेच्छ्राद्धे पूजितः पङ्क्तिपावनः ॥ १३ ॥

एवमधिकारिभिः द्विजैः ज्योतिःशास्त्रम् अध्येतव्यमिति विधाय अथातिक्रान्तनिषेधैः
अनधिकारिभिरपि अधीतमिदं सकललोकसत्काराय भवति, किं पुनः अधिकारिभिरिति
एतदर्थमर्थवादमाह —

म्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम् ।
ऋषिवत् तेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्दैवविद् द्विजः ॥ १४ ॥

¹सम्यक् ससम्प्रदायम् । ²तदुक्तम्—

यद् दानवेन्द्राय मयाय सूर्यः शास्त्रं ददौ संप्रणताय पूर्वम् ।
विष्णोर्वसिष्ठश्च महर्षिमुख्यो ज्ञानामृतं यत् परमाससाद ॥ 1 ॥
पराशरश्चाप्यधिगम्य सोमाद् गुह्यं सुराणां परमाद्भुतं यत् ।
प्रकाशयाञ्चक्रुरथ क्रमेण महर्द्धिमन्तो यवनेषु तत्तत् ॥ 2 ॥

इति । तेषां च ऐहिकसंमानमात्रं न पुनः 'न सांवत्सरपाठी च नरकेषूपपद्यते ।'
इत्यादिफलम् । एषां च निषिद्धानुष्ठानेन³ 'नरकपातस्य सिद्धत्वात् ॥ १४ ॥

-
13. 1. B. श्चैनं (B5 श्चेदं)
2. A3. सम्यक् for कृत्स्नं
14. 1. A1, B. om. स ;
B. सत्संप्रदायम् (B.5 यः ।)
2. B. एतदुक्तम्
3. A2. om. न
4. A2. निरय for नरकं

